विषय : हिन्दी-3

कक्षा : सातवीं

महीना : मार्च

प्रथम स्तर

संदर्भ पाठ - 'चार मित्र'

मुक्त अधिगम संसाधन
(दूसरा खण्ड)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा : सातवीं**

कार्यशाला में शामिल व्यक्तिगण :

1. डॉ. अंजलि काकति : वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी
2. शुवला दत्त शइकीया, उप-निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी. असम

सम्पादन :

1. डॉ. अंजलि काकति

ग्रुप-लीडर :

शुवला दत्त शइकीया, उप-निदेशक, एस. सी. ई.आर. टी. असम

पुनरीक्षण : डॉ. अच्युत शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यलय

अलंकरण : डॉ. अंजलि काकति
शुवला दत्त शइकीया

डी.टी.पी. : श्री सुरेन रामसियारी

समन्वयक :
मुजाफर आली, (कनसालटेन्ट)

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त अधिगम संसाधन

कक्षा- सातवीं **विषय : हिन्दी[3]**

विद्यार्थियों में कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन, कथोपकथन और व्याकरण के संदर्भ में कमी पायी गयी है। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें कहानी कैसे सुनी जाए, कैसे पढ़ी जाए, और कैसे लिखी जाए इन सबका समुचित ज्ञान मिल जाएगा।

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी गद्य साहित्य की एक अन्यतम रोचक विधा कहानी के माध्यम से प्रायोगिक व्याकरण, ब्यवहारिक व्याकरण का ज्ञान प्राप्त होगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

⇨ कहानी के माध्यम से मित्रता का महत्व तथा तात्पर्य समझना, जीव-जंतुओं की सुरक्षा का प्राप्त ज्ञान, प्राणी-हिंसा को रोकने का बोध आदि महत्वपूर्ण बातों का विकास होगा।

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई से कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबधी सम्यक ज्ञान की प्राप्ति के अलावा इस कला से जुड़ा हुआ आनन्द भी मिलेगा।

⇨ सम्बद्ध कहानी से नैतिकता और सदाचार का पाठ भी प्राप्त होगा।

संदर्भ पाठ:

पाठ-दूसरा : 'चार मित्र' (कहानी)

प्रस्तावना : राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा नयी शिक्षा व्यवस्था की अवधारणा तथा दर्शन के तहत उच्च प्राथमिक स्तर के अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक क्षेत्र में हिन्दी भाषा का ज्ञान आवश्यक माना गया है। असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। मूलत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति 2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है।

कहानी में मनुष्य के यथार्थ जीवन की काल्पनिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति हुआ करती है। कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन के कौशल पर ध्यान देना अतीव जरूरी है। इसके लिए इस संसाधन- इकाई में 'चार मित्र' शीर्षक पाठ के सन्दर्भ में बातों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

बच्चों को कहानी से बहुत लगाव होता है। कहानी के माध्यम से कही गई कोई भी बात अपेक्षाकृत ज्यादा असर करती है। कहानी सुनना, बच्चों का प्रिय शौक है। यह एक कला भी है, जिसे हम सभी कुशलता पूर्वक कर सकते हैं। 'चार मित्र' मूलत: पंचतंत्र की एक कहानी है। पंचतंत्र में पशु-पक्षियों की कहानियों के माध्यम से नीति की शिक्षा दी गयी है। कहानी पढ़ने, लिखने, सीखने में तो आसानी होती ही है, साथ ही इसके जरिए आसपास की चीजों पर चर्चा और जीवन मूल्यों पर भी बात-चीत

की जा सकती है। कहानी सुनकर विद्यार्थी श्रवण में दक्षता प्राप्त करते हुए शुद्धता से पढ़ने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। शुद्ध श्रवण से शुद्ध पठन की कला आती है। साथ ही साथ तरह-तरह की ध्वनियों को ध्यान से सुनने और रचना-कार्य में दक्षता भी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह प्रस्तुत संसाधन-इकाई से विद्यार्थियों के साथ हम सभी कहानी के पठन, श्रवण और लेखन का महत्व समझ पायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ?

- ⇨ कहानी के माध्यम से पढ़ने, लिखने में रुचि पैदा होगी, तरह-तरह की ध्वनियों को ध्यान से सुनकर, पहचान कर उनमें अंतर कर पाएँगे, दूर और पास की चीजों को बारीकी से देखने और गिनने के कौशल विकसित होंगे।
- ⇨ बच्चे पाठ व कहानी सुनकर, पढ़कर समझने के योग्य बनेंगे। शुद्ध उच्चारण सहित पाठ पढ़ने की क्षमता का विकास होगा।
- ⇨ पर्यावरण के प्रति प्रेम होगा, पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता विकसित होगी, करुणा-मैत्री आदि भाव विकसित हो इस हेतु यह कहानी प्रेरित करेगी।
- ⇨ बच्चे जानेंगे कि कभी किसी पशु-पक्षी को कैद में रखने का प्रयास न करें। जैसे उन्हें स्वतंत्र रहना अच्छा लगता है, वैसे ही जानवरों को भी स्वतंत्र रहना अच्छा लगता है।

<u>क्रियाकलाप-1</u> <u>प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे</u> ? (परिकल्पना) :

- ⇨ सबसे पहले बच्चों को स्थानीय बोली में पूर्ण हाव-भाव, उतार-चढ़ाव के साथ कहानी सुनाएँ। कहानी से संबंधित कट्-आउट्स भी बोर्ड पर लगा जाएँ। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़े, वैसे ही क्रम से चित्र लगाते जाएँ। अब कहानी को पढ़ने का अभ्यास कराएँ, बच्चों को भी पढ़ने के अंवसर दें।
- ⇨ इसके बाद अध्यापक बच्चों को दलों में विभाजित करते हुए वही पाठ कक्षा में पुनः उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक उसे सुनेंगे।

<u>आएँ, हम सोचें :</u>

- ⇨ आपके विद्यार्थी प्रस्तुत कहानी या उदाहरण स्वरुप कथित कहानी को ध्यान और एकग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?
- ⇨ कहानी सुनकर उन्हें आनन्द प्राप्ति हो रही है या नहीं ?
- ⇨ कहानी को पठन की शुद्धता के साथ वे पढ़ पाये हैं या नहीं ?
- ⇨ कहानी की अंतर्निहित नैतिक शिक्षा को वे समझ पाये हैं या नहीं ?

क्रियाकलाप-2 (क्षेत्र अध्ययन-1)

रेखा दास मरिगाँव के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका हैं। वे अपने विद्यार्थियों को कैसे कहानी पढ़ाती हैं, उसी का वर्णन उन्हीं के शब्दों में यहाँ प्रस्तुत है :

बच्चों को कहानी से बहुत लगाव होता है। कहानी के माध्यम से कही गई कोई भी बात अपेक्षाकृत ज्यादा असर करती है। इसलिए मैं कहानी सुनाते समय बच्चों को गोल घेरे में बिठा कर कहानी सुनाती हूँ-बच्चों को कहानी ओर कथन के लिए प्रेरित करती हूँ। इस तरह नियमित रूप से मेरे द्वारा कही गई उन कहानियों को सुनकर वे आनन्द पाते हैं। मैं कहानी आगे बढ़ाती हूँ और उनको प्रोत्साहित करने के लिए प्रश्न भी करती हूँ कहानी के आगे क्या हुआ होगा इस पर प्रश्न भी करती हूँ। कहानी बनाने तथा पाठ के अतिरिक्त अन्य कहानियाँ सुनाने के अवसर भी बच्चों को देती हूँ। साथ ही पाठ में दिए गये चित्रों को ध्यान से देखने को बोलती हूँ।

आएँ, हम सब सोचें :

⇨ कहानी कथन के प्रति वे आग्रही हैं या नहीं ?

⇨ कहानी का मूल भाव समझा है या नहीं ?

⇨ कहानी से जुड़े हुए चित्रों को देखकर विद्यार्थी कहानी कहने के लिए प्रेरित हुए या नहीं ?

क्रियाकलाप-3

प्रस्तुत पाठ का अनुशीलन :

प्रस्तुत पाठ के अनुशीलन के सहारे कहानी सबंधी प्रश्नों का निराकरण : (एक चुना हुआ पाठांश)

(पाठ-चार मित्र)

एक घने जंगल में एक झील थी। उसके किनारे चार मित्र रहते थे। पहला एक छोटा सा भूरा चूहा था। वह झील के किनारे एक आरामदेह बिल में रहता था।

दूसरा मित्र एक काला-कलूटा कौवा था। वह पास ही एक जामुन के पेड़ पर रहता था। तीसरा मित्र एक कछुवा था। उसका घर झील में था और वहीं उसे आनंद आता था। चौथा मित्र एक हिरन था। उसकी बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखें थीं और सुनहरे बदन पर सफेद चितियाँ।

चारों मित्र हिलमिल कर सुख से रहते थे। जंगल के उस हिस्से में वे बिना किसी परेशानी के शांति से दिन बिता रहे थे।

एक शाम चूहा, कौवा और कछुवा झील के किनारे बैठे बैठे चौथे मित्र हिरन का इंतजार कर रहे थे।

प्रश्न: 1. चारों मित्र कहाँ रहते थे ?

प्रश्न: **2.** दूसरा मित्र कौन था ?

प्रश्न: **3.** चारों मित्र कैसे रहते थे ?

प्रश्न: **4.** हिरन का बदन कैसा था ?

प्रतिफलन :-

कहानी को पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों का उत्तर तैयार करेंगे (लिखित या मौखिक)।

⇨ लिखने और बोलने से शुद्धता और गलतियाँ नजर

आयेंगी। उनमें होनेवाली गलतियों को सुधार देने से उनमें सुधार होंगे।

- ⇨ इस प्रकार विद्यार्थी प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ने के लिए मन से पूरे पाठांश को पढ़ेंगे और कक्षा में जुड़े रहेंगे।
- ⇨ अपनी ज्ञान-बुद्धि से वे सही-गलत का निर्णय कर पायेंगे।

क्रियाकलाप-4

पाठ आधारित व्याकरण शिक्षण :

चूँकि तीसरी भाषा हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए व्याकरण की अलग पाठय-पुस्तक की व्यवस्था नहीं है, अतः सभी पाठों के साथ व्याकरण शिक्षण की व्यवस्था है।

इस पाठ में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से 'र' के विविध रूप, अनुस्वार, अनुनासिक तथा पंचम वर्णों के प्रयोग पर ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है।

शिक्षक-शिक्षिकागण अभ्यास-तालिका के सहारे इनके बारे में ज्ञान देने का प्रयास करेंगे।

अभ्यासतालिका:1

1. भक्ति <u>रस</u> अनुपम है।
2. यह एक <u>रस्सी</u> है।
3. यह <u>रमा</u> की किताब है।

इन तीनों वाक्यों में रेखांकित शब्दों में 'र' का प्रयोग साधारण रूप से हुआ है। अध्यापक तीनों वाक्यों को सही उच्चारण के साथ पढ़ेंगे और विद्यार्थी से भी पढ़वायेंगे। साथ ही दलगत विभाजन करते हुए पढ़वायेंगे और बाकी बच्चे ध्यान से सुनेंगे।

अभ्यास-तालिका : 2

'र' के दूसरे रूप (र्) रेफ तीसरे रूप और (्र)रकार को समझाने के लिए अध्यापक एक तालिका का सहारा लेंगे :

1. आज एक गंभीर विषय पर <u>चर्चा</u> करेंगे।
2. एक <u>वर्ष</u> हो गया।
3. ठंड में <u>बर्फ</u> जम जाती है।
4. बड़ों को प्रणाम करना चाहिए।

अध्यापक लिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों पर जोर देकर पढ़ेंगे और विद्यार्थियों से भी पढ़वायेंगे। मौन वाचन भी करवायेंगे। विद्यार्थि के दलगत विभाजन करते हुए एकल और दलगत रूप से पढ़वायेंगे और बाकी बच्चे ध्यान से सुनेंगे।

अंत में अध्यापक रेफ (र्) के प्रयोग के नियम भी बतायेंगे। जब 'र' किसी व्यंजन के साथ संयुक्त रूप से आता है तब वह कभी संयुक्त व्यंजन से पहले आता है और कभी बाद में आता है। जब 'र' पहले आता है- जैसे र्+च-तो रेफ (र्) होता है, र्च-चर्चा। वैसे ही जब 'र' बाद में आता है जैसे-प्+र, तब 'र' 'रकार' होता है, प्र - प्रकार, प्रणाम।

अभ्यास-तालिका:3

'र' के तीसरे रूप रकार के अन्य एक उपरूप ^ को समझने के लिए एक अभ्यास तालिका का सहारे लेंगे।

1. ट्रेन तेज गति से दौड़ रही है।
2. रबीन मद्रास चला गया।
3. उसको ड्रम बजाना अच्छा लगता है।

अध्यापक लिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों पर जोर देकर पढ़ेंगे, विद्यार्थियों से भी पढ़वायेंगे। इसके बाद अध्यापक र के '^' इस रूप के प्रयोग के बारे में बतायेंगे। जब 'र' ट, ड, द आदि बिना खड़ी पाई के व्यंजनों के साथ संयुक्ताक्षर के रूप में बाद में आता है- तब 'र' का रूप '^' होता है- ट्र, ड्र, द्र होता है।

अभ्यास-तालिका :4

1. कहाँ जा रहे हो ?
2. यहाँ क्या-क्या फल मिलते हैं ?
3. पाँच वाक्य लिखकर लाओ।

अध्यापक तीनों वाक्यों के रेखांकित शब्दों पर जोर देकर सही उच्चारण से पढ़ेंगे और विद्यार्थियों से भी पढ़वायेंगे। दलगत विभाजन करके फिर से पढ़वायेंगे और बाकी बच्चों ध्यान से सुनेंगे। अंत में अध्यापक अनुनासिकता (ँ) का प्रयोग कहाँ होता है और क्यों होता है इसके बारे में बतायेंगे। अनुनासिकता स्वरों का गुण है। स्वरों का उच्चारण करते समय सामान्यता: वायु को केवल मुख से ही बाहर निकाला जाता है। जब वायु को मुख के साथ-साथ नाक से भी बाहर निकाला जाए तो सभी स्वर अनुनासिक हो जाते हैं। अनुनासिकता का हिन्दी में चिह्न 'चंद्रबिन्दु' है।

अभ्यास-तालिका:5

1. गंगा भारत की एक प्रसिद्ध नदी है।
2. चिंता की कोई बात नहीं।
3. अंत में क्या हुआ ?

इस तरह इन उदाहरणों से अध्यापक अनुस्वार के बारे में जानकारी देंगे। हिन्दी में अनुस्वार एक नासिक्य व्यंजन है, जिसे बिन्दु (·) से लिखा जाता है। प्राय: इसे स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है।

अनुस्वार शब्द का अर्थ है स्वर के बाद आनेवाला। अत: यह शब्द के मध्य और अंत में ही आ सकता है, आदि में नहीं। इस ध्वनि की एक विशेषता यह है कि इसका अपना कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता। इसका उच्चारण इसके आगे आनेवाले व्यंजन से प्रभावित होता है।

अनुस्वार नाक से उच्चारित होनेवाले वर्ग के पंचम वर्ण- ङ, ञ, ण, न और म के स्थान पर विकल्प से बिंदु (·) के रूप में आता है, जैसे-

ङ → ङ् + ग → गङ्गा / गंगा।

ञ → ञ् + च → चञ्चल / चंचल।

ण → ण् + ड → खण्ड / खंड।

न → न् + त → अन्त / अंत।

म → म् + प → सम्पर्क / संपर्क।

इन उदाहरणों को देखकर विद्यार्थीने दो-दो वाक्य बनायेंगे और शिक्षक-शिक्षिका को दिखायेंगे।

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन-इकाई में कहानी के लेखन,पठन, श्रवण, कथन आदि के सम्बन्ध में आवश्यक आलोकपात किया गया है, साथ ही साथ प्रायोगिक व्याकरण के ज्ञान देने की भी कोशिश की गयी है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

⇨ Tess India Metarials

⇨ E. Pathsala Matarials

⇨ सरस्वती मानक व्याकरण

सुदृढ़ीकरण :

अध्यापक विद्यार्थियों को उनके स्तर तथा आयु के अनुसार कहानी-लेखन के लिए कुछ विषय देंगे। वे उन पर यथासंभव कहानी लिखकर उन पर व्यावहारिक व्याकरण पर एक आधारित दो बात लिखेंगे। इसके लिए आप उन्हें आवश्यकतानुसार निर्देश देंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

अध्यापक विद्यार्थियों को कम से कम दो-तीन हिन्दी या अपनी मातृभाषा में लिखी हुई कहानियाँ, जो उन्हें पसंद हों, संग्रह करने के लिए निर्देश देंगे।

प्रश्न-भण्डार:

क) 'र' का प्रयोग करके दो शब्द लिखो।

ख) तीन वाक्य लिखो जिनमें ' '-के व्यवहार वाले शब्द का प्रयोग होता हो।

ग) अनुस्वार और अनुनासिक स्वर में अंतर बताओ।

प्रस्तुतकर्ता :- **डॉ. अच्युत शर्मा,**
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग,
गुवाहाटी विश्वविद्यालय

प्रस्तुतकर्ता :
शुवला दत्त शइकीया
उपनिदेशक,
एस. सी. ई. आर. टी. असम